Paper IV

Dr. Jaya
Deptt. of Sociology
B.A Part - II (Hons)

# Emergence of Sociology in India

भारत में समाजशास्त्र एक विज्ञान के रूप में पश्चिमी देशों से ही आया है। अन्य देशों की तरह, भारत में भी कुछ ऐसे विचारक हुए हैं, जिनकी कृतियों में हमें प्राचीन सामाजिक व्यवस्था की झलक मिलती है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र, मनु द्वारा रचित 'मनुस्मृति' आदि प्राचीन ग्रंथों से प्राचीन भारतीय समाज के बारे में जानकारी मिलती है। लेकिन इन रचनाओं का स्वरूप कभी भी समाजशास्त्रीय नहीं था।

यूरोप में, विशेषकर फ्रांस एवं इंग्लैंड में समाजशास्त्र का उदय औद्योगिक क्रांति से उत्पन्न सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप हुआ। लेकिन भारत में औद्योगिक क्रांति बहुत देर से प्रारंभ हुई और समाजशास्त्र की उत्पत्ति पहले हुई। भारत में समाजशास्त्र की उत्पत्ति में उपनिवेशवाद के परिणाम स्वरूप होने वाले परिवर्तनों एवं आधुनिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

यूरोपीय शासकों एवं व्यापारियों ने अनेक [illegible] मानवशास्त्रियों, प्रशासकों, इतिहासकारों एवं ईसाई धर्म के प्रचारकों को भारतीय समाज में जाति व्यवस्था, [illegible] ग्रामीण समुदाय, संयुक्त परिवार, धर्म, साहित्य एवं [illegible] का अध्ययन करने के लिए काफी प्रोत्साहित किया। इन लोगों ने भारतीय समाज और संस्कृति को [illegible] समझने का प्रयास किया ताकि वे भारत पर [illegible] प्रभुत्व कायम रख सकें। इस प्रयास में अनेक [illegible] स्तर के Indologists पैदा हुए। इन विद्वानों ने भारतीय समाज और संस्कृति का [illegible]

Scanned by CamScanner

समाजशास्त्र के क्षेत्र में मानवशास्त्रियों का काफी बोलबाला था।

उपर्युक्त पाश्चात्य विद्वानों की कृतियों से कई भारतीय लोग प्रभावित हुए और एक नये बुद्धिजीवी वर्ग का उदय हुआ। उनमें से कुछ लोगों ने, शैक्षणिक विषयों के अलावा, भारतीय धर्म, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों में विशेष रुचि दिखाई। वे लोग प्रायः उच्च जाति और जमींदार परिवार से जुड़े हुए थे। जो आर्थिक रूप से सम्पन्न तथा सामाजिक दृष्टि से जागरूक थे उन्होंने भारत के महानगरों तथा इंग्लैण्ड में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त की तथा अपने ढंग से भारतीय समस्याओं पर विचार प्रारंभ कर दिया। प्रारंभ में ये बुद्धिजीवी अंग्रेजी शासन के समर्थक थे और अंग्रेजों की मदद से भारतीय समाज में सुधार तथा अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार प्रसार में काफी रुचि ली। इस काल के विद्वानों को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जा सकता है —

राष्ट्रवादी

मार्क्सवादी